P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9*(Part-1) May- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

शिक्षा का आंतरिक नियामकीय तंत्र : मूल्यपरक शिक्षा

सुषमा शर्मा
शोधार्थी,
दर्शन शास्त्र विभाग,
महाराजा गंगा सिंह
विश्वविद्यालय,
बीकानेर, राजस्थान, भारत

सारांश

वर्तमान समाज में व्याप्त जातिवाद, छूआछूत साम्प्रदायिकता, हिंसा आदि अनेक समस्याओं का कारण जब हम तलाशते हैं तो उसमें से एक ''शिक्षा की जर्जर अवस्था'' नजर आती है और समाधान के रूप में, सुधार के रूप में हम शिक्षा तन्त्र से जुड़े बाह्य तत्वों को जैसे–शिक्षण संस्थाओं की स्थिति, आर्थिक समस्या, निजीकरण, पर्याप्त भवनों का अभाव, आरक्षण आदि पर ध्यान देते है परन्तु प्रश्न यह है कि निरंतर शिक्षा– व्यवस्था में सुधार करने के फलस्वरूप भी शिक्षा व्यवस्था में सुधार क्यों नही हो रहा है? क्यों पढ़े लिखे व्यक्तियों द्वारा किये गये अपराधों में बढ़ोतरी हो रही है? क्यों समाज में निरंतर संवेदनहीनता बढ़ रही है? इन सभी प्रश्नों का उत्तर है–'' हमारे आंतरिक नियामकीय तन्त्र–मूल्य परक शिक्षा'' को सुदृढ़ करना।

मुख्य शब्द : नियामकीय तंत्र, मूल्य परक, चातुर्दिक यात्रा, विमुक्तये, नैतिक मूल्य, ज्ञानी, शिक्षा–प्रणाली, यम, नियम, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह।

प्रस्तावना

समाज शिक्षा का प्रतिबिम्ब है शिक्षा रूपी मुख मण्डल यदि मुहांसो से भरा है तो समाज भी वैसा ही बनेगा, समाज को स्वच्छ नहीं बनाया जा सकता।

किसी देश का भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि वहाँ की शिक्षा व्यवस्था कितनी सुदृढ़ है। यदि शिक्षा व्यवस्था उत्कृष्ट एवं वर्तमान अपेक्षाओं के अनुरूप है तो निश्चित रूप से विकास की सम्भावनाएँ प्रबल होंगी। देश में शिक्षा का स्वरूप और शैक्षणिक व्यवस्था इस बात पर भी काफी हद तक निर्भर करती है कि शिक्षण संस्थाओं की स्थिति कैसी है?

वर्तमान समाज अनेक समस्याओं से ग्रस्त है जैसे– जातिवाद, छूआछूत, भ्रष्टाचार, साम्प्रदायिकता आदि। मूलतः इन समस्याओं का कारण मूल्यपरक शिक्षा का ह्रास है। समाज को बदलने का एकमात्र साधन शिक्षा–तंत्र है यहीं पर विद्यार्थियों में बीजारोपण होता है क्योंकि शिक्षा ही विद्यार्थियों को वास्तविक एवं व्यावहारिकता का ज्ञान कराती है, जिससे मनुष्य अपने विकास के साथ–साथ आगे चलकर समाज में अपनी भूमिका निभाने में सफल हो सके।

भारतीय शिक्षा ज्ञान और संस्कार दोनो का प्रहरी है मुख्यतः प्राचीनकालीन शिक्षा जो मूल्यपरक होती थी, परंतु वर्तमान शिक्षा प्रणाली दोषपूर्ण हैं। यह न ही उत्कृष्ट है और न ही वर्तमान अपेक्षाओं के अनुरूप है। यह आर्थिक सुदृढ़ता तो प्रदान करती है परंतु मूल्यपरकता व व्यावहारिकता का इसमें अभाव है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली लार्ड मैकाले की देन है जिसने भारत की अखण्डता पर शासन करने के लिए भारत की रीढ़ मूल्य परक शिक्षा प्रणाली को तोड़ कर उन्हें मानसिक रूप से पराधीन बना दिया। लार्ड मैकाले द्वारा 2 फरवरी 1835 को ब्रिटिश संसद के समक्ष दिया गया उद्बोधन[1] इसी सत्यता को प्रमाणित करता है–''मैंने भारत की चातुर्दिक यात्रा की और एक भी ऐसा आदमी नहीं देखा जो भिखमंगा हो, चोर हो। इस देश में मैंने इतनी सम्पदा, इतना उच्च नैतिक मूल्य, इतने उच्च क्षमतावान व्यक्ति देखें कि मैं सोचता हूँ कि हम कभी भी उस देश को जीत नहीं सकेंगे, जब तक कि हम इसकी रीढ़ की हड्डी– उसकी आध्यात्मिकता और सांस्कृतिक विरासत– को तोड़ नहीं देते। इसलिए मैं प्रस्ताव करता हूँ कि उसकी परिपक्व और प्राचीन शिक्षा प्रणाली और उसकी संस्कृति को बदल दिया जाये क्योंकि अगर भारतीय यह सोचने लगे कि जो कुछ भी विदेशी और अग्रेंजी है, वह अच्छा है और उनसे उच्चतर है तो वे अपना स्वाभिमान, अपनी मातृ संस्कृति को खो बैठेगे और वे वह बन जायेंगे जो हम चाहते है, सचमुच में एक शासित परतंत्र राष्ट्र''।

इस प्रकार हम आज शैक्षिक दृष्टि से उसी दशा को प्राप्त हो गये है जो वास्तव में लार्ड मैकाले चाहते थे– ''शक्ल से भारतीय लेकिन अक्ल से अंग्रेज'' ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर क्रेग जैफरे ने भारतीय युवाओं पर कई वर्षो तक अनुसंधान करने के पश्चात् एक पुस्तक लिखी जिसका शीर्षक

''टाइम पासः यूथ, क्लास एण्ड पॉलिटिक्स ऑफ वेटिंग इन इण्डिया'' है।[2] जिसमें उन्होंने भारतीय उच्च शिक्षा को ठलुआ मध्यवित्तवर्गीय युवाओं के दिल बहलाने का साधन कहा है। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) के विषय में अनिल काकोडकर समिति ने हाल ही में एक सर्वेक्षण कार्य किया इसकी रिपोर्ट के अनुसार 63 प्रतिशत व्यक्तियों का मानना है कि इन सर्वोच्च तकनीकी संस्थानों से भारतीय समाज को कोई लाभ नहीं मिला है। प्रश्न यह उठता है कि यदि आईआईटी जैसे संस्थानों को भी कसौटी पर खरे उतरने में सफलता नहीं मिली तो अन्य विश्वविद्यालयों तथा महाविद्यालयों से आशान्वित होना उनसे अत्यधिक अपेक्षा करने वाली बात हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि शिक्षा ही विद्यार्थियों को वास्तविक एवं व्यावहारिकता का ज्ञान कराती है, जिससे मनुष्य अपने विकास के साथ–साथ आगे चलकर समाज में अपनी भूमिका निभाने में सफल हो सके। शिक्षा का तात्पर्य ही मनुष्य के व्यक्तित्व का 'पूर्ण विकास' है। शास्त्रों में शिक्षा को 'मुक्ति दिलाने का साधन 'बताते हुए कहा गया है–''सा विद्या या विमुक्तये''[3] इनके अनुसार, '' यथार्थ में मनुष्य की आन्तरिक पूर्णता को अभिव्यक्त करना शिक्षा है। ''वस्तुतः शिक्षा के सन्दर्भ में यह मूलभावना रही है किः जो मुक्ति के योग्य बनाए वही विद्या है। अतः जो चित्त की शुद्धि ना करें, मन और इन्द्रियों को वश में करना न सिखाए, निर्भयता तथा स्वावलम्बन उत्पन्न न करें उस शिक्षा में चाहे जितने ज्ञान का कोष, तर्क की कुशलता और भाषा में प्रवीणता क्यों न उपस्थित हो, वह शिक्षा नहीं है।'' एक व्यक्ति सद्व्यवहार तभी कर सकेगा जबवह स्वयं सद्गुणी हो इसलिए शिक्षा पद्धति में नैतिक मूल्यों। की विद्यमानता अत्यावश्यक है इसी से बालक के पूर्ण व्यक्तित्व का विकास होता है और इनकी कमी से समाज में अनेक विसंगतियाँ उत्पन्न होने लगती है जो वर्तमान समाज में परिलक्षित भी है।

मैकाले शिक्षा पद्धति के दुष्परिणामस्वरूप वर्तमान शिक्षा प्रणाली कई चुनौतियों का सामना कर रही है। शिक्षा के तीनों स्तम्भ, यथा पर्याप्त शिक्षा, शिक्षक एवं शिक्षार्थी में मूल्यों का निरन्तर ह्रास होता जा रहा है, ये तीनों अंग एक दूसरे के पूरक है जबकि प्रचलित वर्तमान शिक्षा पद्धति भारतीय शिक्षित जनमानस को कुसंस्कारित, भ्रष्ट, सामाजिक एवं परिवारिक दायित्वों से विमुख, राष्ट्रभाव से विमुख एवं कमजोर बना रही है। वर्तमान शिक्षा–पद्धति ही हमें हमारी संस्कृति से दिन प्रतिदिन दूर कर रही है। आज हम वैज्ञानिक दृष्टि से तो समुन्नत हो रहे है, किन्तुसांस्कारिक दृष्टि से विपन्नता की ओर बढ़ रहे है।

प्रश्न यह है कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली का पिछले 70 वर्षो में अत्यधिक प्रचार–प्रसार हुआ है परन्तु इतने प्रयासों के पश्चात् भी हम जिन्हें शिक्षित, सभ्य एवं सुसंस्कृत कहते है, वे ही लोग विश्व में अधिक अशांति, तनाव एवं हिंसा फैलाते देखे जाते है। महान् दार्शनिक सुकरात के अनुसार कि 'ज्ञानी कभी दुर्गुणी नहीं हो सकता' कथन पर प्रश्न चिह्न लग गया है।

शिक्षित और अशिक्षित व्यक्तियों में अनैतिक और असामाजिक प्रवृत्तियों के उभार का सीधा सा कारण हम उनमें शिक्षा के अभाव को ठहरा सकते है परंतु शिक्षित समुदाय में बढ़ती आपराधिक प्रवृत्तियों और घटनाओं की व्याख्या कैसे की जाये? शिक्षित, उच्च शिक्षित, विशेषज्ञों आदि के मध्य से अपराध के जो आँकड़े सामने आ रहे है वे एक बारगी तो हमें यह सोचने को तो बाध्य कर देते है कि, अन्ततः शिक्षा का समाज के लिए क्या लाभ है? क्या भारतीय शिक्षण व्यवस्था अच्छे व्यक्तियों एवं चरित्रों के निर्माण में विफल सिद्ध हो रही है? जिन नैतिक मूल्यों पर भारतीय शिक्षा पद्धति के आधारित होने का दावा किया जाता है क्या वे नैतिक मूल्य आज अप्रासंगिक हो गए है? अथवा हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली पुरातन भारतीय परम्परा से पथ–भ्रष्ट हो गई है और इसी कारण समाज में नैतिक मूल्यों को स्थापित कर पाने में असफल हो रहे है।

वस्तुतः इन्हीं समस्याओं के समाधान हेतु शिक्षा पर नियामकीय तंत्र स्थापित करने की आवश्यकता प्रतीत होती है। शिक्षा सम्बन्धी समस्याओं अथवा चुनौतियों को मूलतः दो रूपों में विभक्त कर सकतें है–प्रथम वर्ग के अन्तर्गत जो शिक्षा से जुड़े बाह्य कारकों द्वारा नियंत्रित होती है जैसे–शिक्षण संस्थाओं की स्थिति, आर्थिक समस्या, शिक्षा का राजनीतिकरण, नीजिकरण, पर्याप्त भवनों का अभाव, आरक्षण इत्यादि जिनके सुधार हेतु सरकार समय–समय पर प्रयासरत रहती है। इन समस्याओं के समाधान हेतु अथवा नियंत्रित करने हेतु नियामकीय तंत्र विकसित किये जाते हैं। बाह्य नियामकीय तंत्र का तात्पर्य ही होता है कि जो बाहर से नियंत्रण किया जाए परंतु समस्या हमारे अन्दर अर्न्तनिहित हो तो बाहर से नियंत्रण कितना ही किया जाए समाधान नहीं निकलेगा यही कारण है कि शिक्षा प्रणालियों में लगातार सुधार किए जाने पर भी शिक्षित वर्गो द्वारा किए जाने वाले अनैतिक कृत्यों में कमी न होकर लगातार ग्राफ बढ़ता ही जा रहा है।

शिक्षा से सम्बन्धित दूसरा नियामकीय तंत्र आंतरिक नियामकीय तंत्र है। यह तंत्र मनुष्य के आतंरिक पक्ष से जुड़ा है, हमारी नैतिकता, हमारे मूल्यों से जुड़ा है यह हमारे स्व को नियंत्रित करता है इसे हम मूल्यपरक नियामकीय तंत्र कह सकते है जिसका वर्तमान शिक्षा प्रणाली में अभाव नजर आता है। प्राचीन काल की शिक्षा मूल्योन्मुखी थी यही कारण था कि प्राचीन कालीन संस्थाएँ जैसे तक्षशिला, नालंदा आदि संस्थाओं में भारत के ही नहीं अपितु विश्व के विभिन्न भागों के छात्र शिक्षा ग्रहण करने आते थे। मूल्यपरक शिक्षा ही हमारे देश की निधि थी जो आज धूमिल प्रतीत हो रही है।

आज शिक्षा को अधिक से अधिक रोजगार परक बनाने व आर्थिक पक्ष मजबूत बनाने के साधन पर ही बल दिया जाता है। इसीलिए आज के डॉक्टर की दृष्टि रोगी की निरोगता की तरफ न होकर रूपयों की तरफ होती है। पहले वैद्य लोग रोगी की नब्ज देखकर अपनी बुद्धि लगाते थे पर अब डॉक्टर सीधे–सीधे बेवजह तरह–तरह की मशीनी जाँच लिख देते है, क्योंकि प्रत्येक जाँच उनके अर्थ पक्ष को मजबूती प्रदान करने से जुड़ी होती है। स्कूल कॉलेजों में भी घूस देकर दाखिला मिलता है। अध्यापक स्कूलों में भली–भांति नहीं पढ़ाते, जिससे विद्यार्थी ट्यूशन लगाने के लिए मजबूर हो जाता है। कोई किसी की

सहायता, सेवा या उपकार भी करता है तो उसकी दृष्टि पैसा कमाने की तरफ रहती है। बिना पैसे के कोई किसी के लिए कुछ नहीं करना चाहता। ये सब आधुनिक रोजगार परक शिक्षा की देन है।

वर्तमान दोषपूर्ण शिक्षा–प्रणाली के कारण ही आज मनुष्य चाँद–तारों को तो छूकर आ गया है परंतु स्वयं की इच्छाओं, भावनाओं, संवेगों पर विजय प्राप्त नहीं कर सका है वह निराशा व सूनेपन से भरा हुआ है।

यह भी कटु सत्य है कि विभिन्न शिक्षा केन्द्रों अनुसधांन केन्द्रों को महज डिग्रीधारी युवाओं की उत्पादक फैक्ट्रियों के रूप में सिद्ध होने की बात कदापि उपलब्धि पूर्ण लक्ष्य नहीं हो सकता है। यथार्थ एवं तथ्यात्मक तत्व यह भी है कि उच्च शिक्षा केन्द्रों से बड़ी–बड़ी उपलब्धियाँ प्राप्त करके युवाओं में समुचित और योग्यता अनुरूप रोजगार के प्रस्तावों के न आने से हीनता का बोध उत्पन्न हो जाता है उनका आत्मविश्वास डगमगा जाता है परिणामस्वरूप अपनी उच्च योग्यता के बल पर कुछ प्राप्त करने की उपलब्धि के लक्ष्य की बजाय वे किसी तरह जुगाड़ की तलाश में व्यस्त रह जाते है अथवा अनुचित कृत्यों में संलग्न हो जाते है अथवा जीवन की विपरीत परिस्थितियों का सामना करने का साहस वे नहीं रख पाते है। ऐसा हमारे आन्तरिक पक्ष का समुचित विकास नहीं हो पाने के कारण होता है।

वस्तुतः इसी कारण आज शिक्षा का आंतरिक नियामकीय तंत्र को अत्यधिक विकसित करने की आवश्यकता प्रतीत होती है क्योंकि मनुष्य से जुड़े बाह्य कारकों पर कितना ही नियंत्रण, कितना ही सुधार क्यों न कर ले समस्या जड़ से समाप्त नहीं होगी नियंत्रण हमारा स्वयं पर जब होगा तब ही उन्नत समाज की स्थापना कर पाएंगे, समस्याएँ तब ही समाप्त होगी। बाह्य नियंत्रण तो एक प्रकार से वैसी ही स्थिति है कि सांप कहीं होता है और हम लाठी कहीं पीट रहे होते है। स्वामी विवेकानन्द ने भी कहा है– ''वर्तमान शिक्षा से आपका केवल बाहरी परिवर्तन हो रहा है परन्तु नई–नई उद्भावनी शक्ति के अभाव के कारण आप लोगों को धन कमाने का उपाय उपलब्ध नहीं हो रहा है।''[4]

मनुष्य का जन्मजात व्यवहार पशुगत् होता है मूल्यपरक शिक्षा के द्वारा उसके इस व्यवहार में परिमार्जन व परिवर्तन किया जाता है यह हमारी विचारधारा को विस्तृत बनाती है यह केवल परिस्थितियों के साथ समायोजन करना ही नहीं सिखाती अपितु उसमें अपने अनुकूल परिस्थितियों का निर्माण करने की क्षमता का विकास भी करती है यही हमें सामाजिक बुराईयों एवं कुप्रथाओं से दूर करने में सहायक सिद्ध होती है और साथ ही यह मनुष्य को अनेक चाहे व्यक्तिगत हो या चाहे सामाजिक चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बनाती है तथा राष्ट्रीय विकास में सहायक की भूमिका निभाती है।

वैदिक कालीन युग से लेकर वर्तमान तक विभिन्न चिंतको ने शिक्षा में नैतिकता के अंग पर अधिक महत्व दिया है क्योंकि हमारी सस्कृंति में तो गर्भाधान के समय से ही संस्कारों की शिक्षा शुरू हो जाती है। माता ही सर्वप्रथम गुरू है। परिवार के अन्य बन्धुओं से बालक का व्यवहार कैसा होना चाहिए इसका स्पष्ट उल्लेख अथर्ववेद में किया गया है। वेदांत दर्शन के अनुसार – ''शिक्षा का अर्थ है जो हमारे भीतर छिपा है, उसका अनावरण।'' स्वामी विवेकानन्द के अनुसार ''शिक्षा मनुष्य में अन्तर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है।''[5] गांधीजी के अनुसार – ''समस्त ज्ञान का लक्ष्य चरित्र का निर्माण होना चाहिए।''[6] इनके अलावा, दयानन्द सरस्वती, टैगोर, जे. कृष्णमूर्ति आदि चितंको ने भी मूल्यपरक शिक्षा का समर्थन किया है।

शिक्षा में नैतिक मूल्यों की स्थापना हेतु शिक्षक को सर्वप्रथम ''यम व नियम'' के दस सिद्धांतों को विद्यार्थियों के मन में बैठाना चाहिए यम[7] 5 है– अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह। पांच नियम[8] है– शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर–प्रणिधान (ईश्वर के प्रति स्वकर्मार्पण) यदि विद्यार्थी इन 10 सिद्धांतों को आत्मसात् कर ले तो अरस्तू के कथनानुसार ''स्वस्थ मनुष्य में स्वस्थ मन का निर्माण'' हो जाएगा और सुकरात का यह कथन कि 'ज्ञानी कभी दुर्गुणी नहीं हो सकता' भी सत्य घोषित हो जायेगा। इसके साथ विभिन्न महापुरूषों की प्रेरक कथाएं भी बतानी चाहिए। शिक्षक स्वयं विद्यार्थियों का आदर्श बने ऐसा उनका आचरण होना चाहिए। भारतीय दर्शन की जो वैदिक अवधारणा है उसके अनुसार मन में जन्मों से पड़ी काई को हटाने के लिए योगाभ्यास की आवश्यकता पर बल दिया है, क्योंकि मन से ही कोई साधु होते हैं तो कोई आतंकवादी। इसलिए विद्यार्थियों को योगाभ्यास भी करवाया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

अतः आज आवश्यकता शिक्षा में नए नैतिक मूल्यों की स्थापना की है। हमारा देश 'विश्व–गुरू' की उपाधियाँ प्राप्त करने वाला रहा है, परंतु आज हम गुरू की महिमा एवं 'गुरू–शिष्य' रिश्तों को भूलने पर उतारू है। फिर से खोई हुई गरिमा को पाने के लिए हमें अथक पर सततः प्रयास करने की आवश्यकता है और शिक्षा में बाह्य नियामकीय तंत्र के साथ मूल्यपरक आंतरिक नियामकीय तंत्र विकसित कर समाज में आदर्श एवं उच्च मूल्य स्थापित करने होंगे। जिससे भारत की शिक्षा प्रणाली पुनः विश्व स्तरीय बन सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *कल्याण 'शिक्षांक' गीता प्रेस, गोरखपुर*
2. *Craig Jeffrey; time pass : youth, class and the politics of waiting in india 2010, Stanford university press.*
3. *''तत्कर्म यन्न बन्धाय, सा विद्या या विमुक्तये। आयासायापरं कर्म, विद्याऽन्या शिल्पनैपुणम।।'' श्री विष्णुपुराण (1–19–41)*
4. *रामनाथ शर्मा, राजेन्द्र कुमार शर्मा, शिक्षा दर्शन, अटलांटिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा. लि.) 2008*
5. *डॉ. आबिदा परवीन, प्रकाश नारायण नाराणी, शिक्षा के उद्देश्य, ज्ञान और पाठ्यक्रम, राजस्थान प्रकाशन, 2014*
6. *रामनाथ शर्मा, राजेन्द्र कुमार शर्मा, शिक्षा दर्शन।*
7. *'यमयन्ति निवर्तयन्तीति यमाः' देवराज एन. के., भारतीय दर्शन, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, पंचम संस्करण, 1999 पृ. 421*
8. *'नियमयन्ति प्रेरयन्तीति नियमा :' वही, पृ. 422*